फरवरी 2021 | मूल्य :20/-

डाक पंजीयन क्र.: M.P. / I.D.C. / 892 / 2021-23
पत्र पंजीयक क्र.: M.P. 15059

संस्कार सागर

वर्ष :24 | अंक : 257

संस्कार सागर पढ़िये ✲ संस्कार गढ़िये ✲ संस्कार सागर के सदस्य बनिए

प्रागैतिहासिक पुरातात्विक विरासत का क्षेत्र-नवागढ़

* शोध छात्रा : श्रीमती अर्पिता रंजन, आरा *

भारतीय संस्कृति में सभी कलाओं एवं विधाओं का समावेश है। प्राचीन भारत की प्राकृतिक विशेषता है कि यहाँ ग्रीष्म, वर्षा, शीत के साथ हेमंत, शिशिर एवं वसंत छह ऋतुओं से पर्यावरण हराभरा एवं समृद्धशाली रहता है। इसीलिये भारत के प्रत्येक प्रदेश की लोककला लोक संस्कृति, लोक परम्परायें, लोक संगीत, लोक साहित्य, लोक शिल्प से लोक जीवन विभिन्न आयामों से उत्प्रेरित सृजनशीलता से अपनी पहचान बनाकर भारतीय संस्कृति की विराटता, वैशिष्ट्य से सम्पूर्ण विश्व को चमत्कृत करती है।

विशेषतया बुन्देलखण्ड में सर्वधर्म समभाव, साहित्य, कला, शिल्प स्थापत्य का उद्भव एवं विकास का चर्मोत्कर्ष, समृद्धि, खुशहाली, से जनजीवन सदैव उन्नतशील रहा है। यहाँ के शासकों ने कृषि को मुख्यता प्रदान कर हजारों कूप, बावड़ी तथा सैकड़ों विशाल सरोवरों से भूमि की उर्वरा शक्ति से समृद्धि विकास के साथ आत्मशांति-संतोष हेतु अध्यात्म एवं भक्ति के आयाम भी स्थापित किये हैं। जिनसे जीवन में स्थिरता एवं पारस्परिक मैत्रीभाव विकसित होता रहा है।

इसी समृद्धि एवं धन वैभव के आकर्षण ने राज्य विस्तार, सैन्यबल एवं शक्ति का दुरुपयोग, वैमनस्य-ईर्ष्या ने युद्ध की विभीषिका को भी उद्दीप्त किया है। धन-वैभव की चाहत, काम वासना तथा राज्यलिप्सा ने सैकड़ों समृद्धशाली विशाल नगरों को भी ध्वस्त कराया है। जिसके उदाहरण महोबा, लासपुर, सलक्षणपुर, मदनपुर, दुधही, चांदपुर, सैरोंन, नवागढ़, अजयगढ़ एवं खजुराहों हैं।

जहां अन्य क्षेत्रों में मूर्ति एवं स्थापत्य के साक्ष्य मिले हैं वहीं नवागढ़ में इनके साथ पुरावैशिष्ट्य विलक्षण है। 10 किमी. विस्तार वाले नवागढ़ में किये गये अन्वेषणों ने इसकी सम्पन्नता, आध्यात्मिक साधना केन्द्र, गुरुकुल परम्परा, महानगरीय संस्कृति के साथ सर्वधर्म समभाव, कला-शिल्प की समृद्धि के रहस्य उद्घाटित किये हैं।

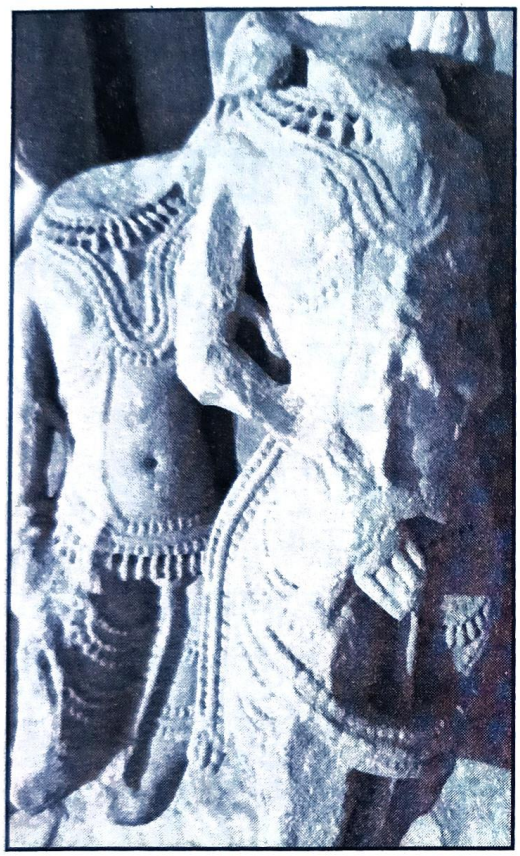

यहाँ लोवर पैलियोलेथिक (2 से 15 लाख वर्ष) मिडिल पैलियोलेथिक (35 हजार से 2 लाख वर्ष) अपर पैलियोलेथिक (12 हजार से 35 हजार वर्ष) प्राचीन पाषाण कालीन सभ्यता, हजारों वर्ष प्राचीन प्राकृतिक साधना शैलाश्रय, पैट्रोलिक कपमार्क, 15 हजार वर्ष प्राचीन मैसोलेथिक रॉक आर्ट, रॉक पेंटिंग जिसमें जैन दर्शन के महत्वपूर्ण गूढ़ रहस्य छिपे हैं। गले में पहनने वाले मिट्टी पाषाण के मनके से लेकर गुप्तकालीन एवं प्रतिहार कालीन मूर्ति शिल्प, चंदेल कालीन बावड़ी-स्थापत्य जिन मंदिरों के समूह जिनमें संवत् 1123, 1188, 1195, 1202, 1203, 1490, 1548, 1586, 1885 से आज तक की मूर्तियाँ अन्वेषित की गयी हैं।

यह पुरातात्त्विक सम्पदा जैन धर्म की प्राचीनता उद्भव एवं विकास के सशक्त साक्ष्य नवागढ़ को प्रागैतिहासिक धरोहर का विशाल क्षेत्र घोषित करते हैं।

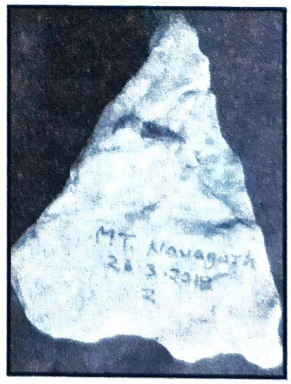

ऐसे प्रागैतिहासिक पुरा सम्पन्न क्षेत्र के टीलों में न जाने कितने रहस्य संरक्षित है जो भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत को अपने अंदर समेटे हुये है। डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. गिरिराज कुमार जैसे पुरातत्त्वविद जैन दर्शन के इस नवागढ़ के साक्ष्यों का अन्वेषण करके गौरवान्वित हैं। उनका कहना है हमने कई क्षेत्रों में कार्य किया परन्तु नवागढ़ जैसी पुरा सम्पदा अत्यंत विलक्षण एवं विशिष्ट हैं।

मुझे ऐसी साइट पर कार्य करने का सौभाग्य ब्र. जयकुमार जी निशांत, श्री संजय मंजुल सर एवं मेरे निर्देशक डॉ. प्रकाशराय के सद् प्रयास एवं आशीर्वाद का फल है। शासन-प्रशासन से अनुरोध है ऐसे क्षेत्रों में अन्वेषण कर भारतीय संस्कृति के विशेष आयाम स्थापित करें।

सहायक अधीक्षण पुरातत्त्वविद् संस्कृत अभिलेख पं. दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्त्व संस्थान ग्रेटर नोयड़ा